पद १६५

(राग: पिलु - ताल: दीपचंदी)

हम समझे तुम समझो रे भाई। समज छांड बिन समझत नाही।।धू.।। जो नाहीं समजे सो वाकोहि समझे। समझ बखाना सो मुख साई।।१।। समझ फाड आतमकूसमझे। ताकी लो महिमा बरनी न जाई।।२।। दीपप्रभा दीपक नाही समझे। बिन प्रकाश दीप न जगमाई।।३।। हंस गुरु मुखब्रह्मही समझा। और श्रुति बैन करत बढाई।।४।। ज्ञानरूप मार्ताण्ड प्रभुबिन। ना कोई समझे और समझाई।।५॥